पंचम अध्याय

" सेठ गोविन्ददास के विविच्च नाटकों में ऐतिहासिकता।"

पंचम अध्याय

''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता''

भारतीय काव्यशास्त्र में नाटक को 'रम्य रचना' की संज्ञा दी गयी है। मनुष्य के जीवन का यथार्थ चित्रण नाटक में दिखायी देता है। नाटककार सेठ गोविन्ददास जी ने निजी अनुभवों से, राष्ट्रीय एकात्म की स्थापना और देशभक्ति का प्रसार करके भारत को गुलामगिरी से मुक्त करने का सेठ जी ने अपने विवेच्य नाटकों के जरिए से बताने का सफल प्रयास किया है। एक साम्राज्य की स्थापना करना उनके नाटकों का प्रमुख लक्ष्य रहा है। नाटककार के निजी अनुभवों और समाज के प्रति उसके दायित्व के एकीकरण की जितनी क्षमता नाटकों में होती है, उतनी अन्य किसी विधा में नहीं होती है। नाटक का और समाज का, प्रेक्षकवर्ग के गहरे तालुकात के बलबुते पर ही पूरी 'नाटक विधा' निर्मित है। संप्रेषण कि क्रिया इसमें सबसे अच्छी और जल्द हो जाती है। साहित्य में 'नाटक' विधा का अनन्य साधारण महत्व है।

नाट्य-कला को भरत जैसे ऋषी मुनियों ने भगवान को समर्पित करने के उद्देश्य से किया जानेवाला, आँखों से देखा जानेवाला सुंदर यज्ञ कहा है। नाटक में पुरूष और स्त्री दोनों पात्र रहते हुए जन-साधारण के जीवन की विविधता रसयुक्त दर्शन हमें दिखाई देते हैं। सभी प्रकार के दर्शकों का समाधान नाटक करता है।

मानव-जीवन स्वंय एक नाटक है। इस का प्रतिबिंब हिन्दी नाटक में देखने को मिलता है। हिन्दी में ऐतिहासिक नाटकों को अनन्य साधारण महत्व प्राप्त हुआ है। अब ऐतिहासिक नाटकों की परिभाषा, अर्थ और स्वरूप को देखना महत्वपूर्ण है।

5.1 ऐतिहासिक नाटकों की पृष्ठभूमि -

ऐतिहासिक नाटकों की विषयवस्तु इतिहास पर आधारित होती है। इसमें ऐतिहासिक कथा-रचना के लिए यह आवश्यक है कि नाटककार इतिहास के जिस युग से कथा के सूत्र ले रहा है, उस युग की पृष्ठभूमि और वातावरण का सूत्र ले रहा है, उस युग की पृष्ठभूमि

और वातावरण का भली प्रकार अध्ययन करें। ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तथा वर्तमान का तथा यथार्थ और कल्पना का संतुलित समन्वय होना चाहिए और ऐतिहासिक विकास के किसी भी युग के कथा का चयन क्यों न किया गया हो, उस युग की पृष्ठभूमि और विवरण कथा के निर्वाह एवं विकास के लिए आवश्यक होता है।

ऐतिहासिक नाटकों में चरित्र-चित्रण का, मुख्य पात्रों का इतिहास सिध्द होना आवश्यक है। उन पात्रों के कार्याकलाप का भी अधिकांश भाग ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक होना चाहिए। चरित्रों के सम्बन्ध में यथार्थता और कल्पनात्मकता का प्रश्न गंभीर रूप से विचारणीय हो जाता है। ऐतिहासिक नाटकों में नाटककार किसी पात्र को इतिहास में मिलनेवाले सामान्य विवरण के आधार पर प्रस्तुत करता रहता है। इसी कारण नाटककार जैसा भी स्वरूप प्रस्तुत करता है, हम उसे यथार्थ मान लेते है।

हिन्दी के नाटक के क्षेत्र में ऐतिहासिक कथा की जो प्रवृत्ति मिलती है, उसका आरंभ तो भारतेन्दु युग में ही हो चुका था। परन्तु आधुनिक युग के ऐतिहासिक नाटककारों ने अपना-अपना अलग अस्तित्व निर्माण किया है।

5.2 'इतिहास' अर्थ एवं परिभाषाएँ

'इतिहास' साहित्य का दर्पण है। वह भूत को हूबहू छबि की तरह हमारे सामने रख देता है। लेकिन वर्तमान को प्रेरणा भी देता है और भविष्य को सूचनाएँ भी दे सकता है। विभिन्न शब्दकोशों में 'इतिहास' के मूल अर्थ निम्म प्रकार से मिलते है -

1. 'संस्कृत हिन्दी शब्दकोश' -

''इतिहास - (इति + ह + आस) असँ, धातु, लिटलकार, अन्य पं.ए.व.''

1. इतिहास - (परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह)

''धर्मार्थ काम मोक्षाणामुपदेश समन्वितम, पूर्ववत्त-कथायुक्त मितिहांस प्रचक्षते।''

2. वीरगाथा - (जैसा कि महाभारत)

3. ऐतिहासिक साक्ष्य, परंपरा - (जिसकी पौराणिक एक प्रमाण मानेत है)

सम - निबन्धम - उपाख्यान युक्त या वर्णनात्मक रचना।''[1]

2. 'मानक हिन्दी कोश' -

''पहला खण्ड (अ-क) में इतिहास का अर्थ-पुं. (सं.इतिह, क.स.) इतिहास इतिह आस- (बैठना)।

1. किसी व्यक्ति, समाज या देश की महत्वपूर्ण विशिष्ट या सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं, तथ्यों, आदि का कालक्रम के अनुसार होनेवाला विवेचन।''[2]

3. 'हिन्दी शब्द सागर'

(प्रथम खण्ड) द्वारा इतिहास का अर्थ प्रस्तुत किया गया है कि इतिहास - संज्ञा पु. (सं.)

1. बीती हुयी प्रसिध्द घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले पुरूषों का कालक्रम से वर्णन।

2. वह पुस्तक जिसमें बीती हुई प्रसिध्द घटनाओं और भूत पुरूषों का वर्णन हो।

3. किसी विषय में सम्बन्धित तथ्यों का आदिकाल से वर्तमान।

4. कथा वृत्त।''[3]

4. प्रसिध्द विद्वान डॉ. गौरी शंकर हिराचंद ओझा के विचार से अतीत के गौरव तथा घटनाओं के उदाहरणों से मनुष्य जाति एवं राष्ट्र में जिस संजीवनी शक्ति का संचार होता है उसे इतिहास के अतिरिक्त अन्य उपायों से प्राप्त करके सुरक्षित रखना कठिन ही नहीं प्रत्युत्त, एक प्रकार से असम्भव है। इतिहास भूतकाल को अति स्मृति तथा भविष्य को अदृश्य सृष्टि को ज्ञात रूपी किरणों द्वारा सदा प्रकाशित करता रहता है।''[4]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर इतिहास शब्द के निम्न तरह भिन्न-भिन्न अर्थ प्राप्त होते है -

इतिहास शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ इस प्रकार दिया जाता है -

1. ''इति-ह-आस - ''ऐसा हुआ'' अथवा यह ऐसा हुआ ''।

2. ''इति-आस (बैठना) बीती घटनाओं को निकटता से परखना। इन व्युत्पत्तिमूलक अर्थो के अतिरिक्त इतिहास शब्द के अर्थ को निम्न प्रकार से बताया गया है -

1. इतिहास अतित की प्रमाणित सत्य घटनाओं का, जीवन का, लेखाजोखा होता है।

2. इतिहास केवल राजाओं या व्यक्तिओं के जीवन का लेखाजोखा मात्र नहीं है वह युग विशेष को समस्त सांस्कृतिक धरोहर का लेखाजोखा है।

3. भविष्य के लिए प्रेरक, अतित की घटनाएँ।

सारांश में - इतिहास अतित की सत्य घटनाओं का गणेषणापूर्ण कालक्रमबध्द ऐसा विवरण है जो उस समाज देश या व्यक्ति को साधारण घटनाओं के अतिरिक्त पुरे समाज या जाति को संस्कृति का लेखाजोखा प्रस्तुत करता है। यह पुराण,कल्पित, कथा, धर्मशास्त्र नहीं है, बल्कि वास्तव जीवन का जिवंत लेखा जोखा है। इतिहास का मंतव्य केवल अतित का विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं है। आज इतिहास, इतिहासवाद (हिस्टरी सिजन), इतिहास का लेखन (हिस्टरियाग्राफी) तथा इतिहास दर्शन आदि के क्षेत्र विकसित कर चुका है । क्रोचे ने इतिहास की परिभाषा इस तरह दी है, ''सारा इतिहास वस्तुतः समसामायिक इतिहास है।''[5]

ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास की अपेक्षा कल्पना का अधिक्य रहता है, परन्तु कल्पना का आधार ही ऐतिहासिक सत्य है।

5.3 ऐतिहासिक नाटकों की परिभाषाएँ और स्वरूप -

नाटक जीवन का कलात्मक संकलन है और ऐतिहासिक नाटक नाट्य-साहित्य की विधा-विशेष-वस्तुनिष्ठ तथ्यों की रसात्मक उदात्तिकृत भावाभिव्यक्ति है। ऐतिहासिक नाटककार अतित के घटनाप्रसंग, पात्र अथवा काल-विशेष का समावेश ऐतिहासिक नाटकों में करता है।

ऐतिहासिक नाटक याने इतिहास की साहित्यिक प्रतिकृति है, जो ऐतिहासिक नाटककार की सृजनात्मक अथवा स्मृत्याभास कल्पना शक्ति से परिविष्टित होती है। ऐतिहासिक नाटक की एक निश्चित परिभाषा अभी तक नहीं दी जा सकी है। ऐतिहासिक नाटकों की परिभाषा फिर भी कुछ विद्वानों ने निम्नलिखित प्रकार से देने का सफल प्रयास किया है।

1. आई. खिनर - ''इतिहास के उद्देश्य को लेकर लिखी गयी एक नाटकीय व्यवस्था याने ऐतिहासकि नाटक।''

2. इतिहास और साहित्य के काव्यात्मक समन्वय का प्रतिफलन ऐतिहासिक कृति है और तत्कालीन परिवेश में घटना प्रसंगो की क्षृंखलित कार्यकारण परम्परा ऐतिहासिक नाटकीयता है।

जिन नाटकों के नायकों ने देश की राजनीति और उसके उत्थान-पतन में भाग लिया है उसे ऐतिहासिक नाटक कहते है।

वस्तुत: किसी विधा को परिभाषित करने का मतलब है उसकी मान्यताओं के साथ उसका समग्र प्रत्यक्षीकरण और ऐतिहासिक नाटकों की समग्रता कभी एक बिन्दु पर व्यक्त नहीं हुई है। कभी रूप को लेकर परिभाषा दी जाती है। इसलिए हिन्दी ही नहीं, अन्य भाषाओं के साहित्य में भी ऐतिहासिक नाटक की अभी कोई ऐसी परिभाषा नहीं दी जा सकी है। जो उसकी सभी विशिष्टताओं और बारिकायीयों को समेटनेवाली तथा सर्वमान्य है। ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास को प्रधानता दी है।

नाटक ऐतिहासिक तभी हो सकता है जब उसमें नाटककार के युग का चित्रण होगा। ऐतिहासिक नाटककार इतिहास से ग्रहीत घटनाओं में कार्यकारण संबंध नाटकीय कल्पना द्वारा कलात्मक ढंग से स्थापित करता है। नाटककार जिस युग का चित्रण वह अपने नाटक में करता है वह हम से परिचित होता है। नाटक जीवन का कलात्मक संकलन है और ऐतिहासिक नाटक नाट्य-साहित्य की विधा विशेष वस्तुनिष्ठ तथ्यों की रसात्मक,

उदात्त-कृति की भावाभिव्यक्ति है। हिन्दी में स्वतंत्रता पूर्व लिखे जानेवाले नाटकों में राष्ट्रीय चेतना प्रमुख रही है। इतिहास, कल्पना, और लक्ष्य तीनों को ध्यान में रखकर परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है। "ऐतिहासिक नाटक इतिहास कथावस्तु का नाटकीय कल्पना द्वारा किया गया सोद्देश्य कलात्मक नियोजन होता है।"[6]

ऐतिहासिक नाटक इतिहास के तथ्यों पर आधारित रचनात्मक कृति है। जिसमें जीवन के अव्यक्त प्रसंगो को व्यक्त करने और राजनीति की अपेक्षा सामाजिक, सांस्कृतिक उत्थान के मूल प्रेरणा स्त्रोंतो को रेखांकित करने का सेठ जी ने प्रयास किया है। ऐतिहासिक नाटक में दो प्रकार की उपलब्धियाँ होती है। इतिहास के माध्यम से अतित जीवन और जगत का प्रत्यक्षीकरण होता है, दूसरी ओर कला के माध्यम से मानवीय प्रवृत्तियों, विशेष क्षणों में किए गए आचरणों का अनुभव होता है। ऐतिहासिक नाटककार का यह दायित्व होता है कि जहाँ तक संभव हो इतिहास के तथ्यों के साथ न्याय करे। नाटकीय रचना तंत्र के साथ इतिहास के प्रति बढती गयी सुरक्षा को देखकर ही ऐतिहासिक नाटक का उचित मूल्यांकन किया जाता है। इतना निश्चित है कि ऐतिहासिक नाटक में इतिहासकार और नाटककार इन दोनों में मिलाप दिखायी देता है।

हिन्दी में ऐतिहासिक नाटकों को उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में अकस्मात उद्भव माना जाता है। अकस्मात इसलिए की इसके पहले न किसी ने ऐतिहासिक नाटक लिखे थे न प्रयास किया था। समसामायिक समस्याओं को अतित के सन्दर्भ में देखने का विचार ही नाटककारों के मन में कभी आया नहीं था। वैसे देखा जाये तो हिन्दी में ऐतिहासिक नाटकों का सुत्रपात भारतेन्दु से ही होता है।

5.4 ऐतिहासिक नाटकों की श्रेणीयाँ - तथा वर्गविभाजन और गुण -

नाटकों की ऐतिहासिकता के विषय में अनेक विद्वानों के विभिन्न मत हैं। जिन नाटकों में देश की राजनीति और उत्थान-पतन में भाग लिया हो वे नाटक ऐतिहासिक है। पर सेठ गोविन्ददास जी ने ऐतिहासिक नाटकों की व्याख्या अलग की है। वे कहते है कि

प्राचीन जमाने में पुराण और इतिहास कभी समान कार्य किया करते थे इसीलिए ऐतिहासिक नाटकों में पुराण और इतिहास का जिस नाटकों में समावेश है वे नाटक ऐतिहासिक है। इसी तथ्य के अनुसार सेठ गोविन्ददास जी ने हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह जैसे नाटकों की निर्मिती की है। 'कर्तव्य' और 'विकास' इन नाटकों का कथानक पौराणिक माना जाता है।

ऐतिहासिक नाटकों की श्रेणीयाँ प्रमुख रूप से तीन मानी जाती है। प्रागैतिहासिक, शुध्द-ऐतिहासिक और ऐतिहासिक जीवनी नाटक। इन का स्वरूप और नाटकों का विवेचन हमें निम्नलिखित रूप से देखने को मिलते हैं।

5.4.1 प्रागैतिहासिक नाटक -

'पुराणों में दिये गये इतिहास पर आधारित वे सभी नाटक इस कोटि में सम्मिलित किये जा सकते है जिनको हम पौराणिक नाटकों की श्रेणी में रख सकते है।' सेठ जी के प्रागैतिहासिक नाटक तथ्यान्वेषण के अच्छे उदाहरण है। उस नाटकों में सेठ जी ने बडी सुंदरता से पुरानी कथा को हमारे सामने आधुनिक रूप में रखने का सफल प्रयास किया है।

प्रागैतिहासिक को ही पुराणेतिहासिक भी कहा जाता है। सेठ जी के प्रागैतिहासिक नाटक राम से गांधी तक लिखे है उनमेंसे तीन प्रमुख नाटक निम्नलिखित प्रकार से देखने को मिलते है - 1. कर्तव्य (पूवार्ध्द) 2. कर्तव्य - (उत्तरार्ध्द) और 3. विकास

कर्तव्य पूवार्ध्द में रामचरित्र को ध्यान में रखकर लिखा गया नाटक है। इस नाटक में सेठ जी ने राम को एक आदर्श मानव माना है और उनकी कर्तव्य-पालन करने की दृढता दिखाकर कर्तव्य-पालन के उच्च आदर्श की स्थापना की गई है।

कर्तव्य के उत्तरार्ध्द में सेठ जी ने कृष्ण चरित्र को ध्यान में रखकर लिखा गया है। इस नाटक में सेठ जी ने इसका आरम्भ गोकुल के यमुना तट से होता है, जहाँ श्रीकृष्ण मुरली बजाते है।

'विकास' में सेठ जी बुध्द, अशोक, इसी की झाँकियाँ दिखाते गांधी तक आ गये है। 'विकास' शिल्प विधान की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

5.4.2 शुध्द-ऐतिहासिक नाटक -

'इनमें इतिहास प्रसिध्द पुरूषों पर प्रामाणिक ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर नाटकों की रचना की गई है।' सेठ जी के ज्यादातर प्रसिध्द नाटक शुध्द-ऐतिहासिक ही माने जाते है। पुराण और इतिहास का गहरा संबंध है। पुराणों का आज यह साम्प्रदायिक रूप मिलता है। उसकी पृष्ठभूमि में ब्राह्मण और क्षत्रियों का संघर्ष है। आज कल इतिहास और पौराणिक कथाओं पर विश्वास कोई करता ही नहीं। प्राक्र-इतिहास जो ऐसा इतिहास है जिसमें तथ्य खोजने की परम आवश्यकता होती उसे आज हमें मानना ही पडेगा। हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह यह शुध्द ऐतिहासिक नाटक माने जाते है।

हर्ष नाटक का प्रारंभ समस्या से होता है। राजवर्ध्दन की हत्या होने के कारण राजगद्दी खाली रहती है। माधवगुप्त के कहने पर हर्ष सिंहासन ग्रहण कर लेता है। इस नाटक में सेठ जी ने हर्ष को एक आदर्श राजा माना है उसके विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

माधवगुप्त, शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन आदि का चित्रण भी सफलतापूर्वक स्पष्ट हुआ है। हर्ष सबसे प्रथम भाई को छल से मारनेवाले गौडाधिपति शशांक पर चढाई करने के लिए अपने सेनापति को भेजता है और स्वंय अपनी बहन राज्यश्री को खोजने निकलता है। उसे दोनों कार्यो में सफलता मिलती है। शशांक अधीनता स्वीकार कर लेता है और राज्यश्री मिल जाती है। कथा की समाप्ति हर्ष के समग्र सम्पत्ति के दान और षडयन्त्रकारियों के हर्ष को मारने के षडयन्त्र की असफलता पर होती है।

'शशिगुप्त' नाटक प्रसिध्द मौर्य सम्राट की ऐतिहासिक गाथा को लेकर सेठ जी ने लिखा है। इतिहास की घटनाओं को एक नया रूप दिया है। मोर-पर्वत का निवासी होने से मौर्य है। देशप्रेम देश के ऐक्य और स्वाधीनता की भावना शशिगुप्त के रगरग में भरी हुई है। 'शशिगुप्त' नाटक काव्यात्मक प्रांजल भाषा और कथोपकथन, चरित्रचित्रण तथा नये तथ्यों की खोज और एक साम्राज्य की स्थापना के लिए ऐतिहासिक नाटकों में गणनीय स्थान रखता है।

'शेरशाह' सेठ जी ने मुस्लिम इतिहास के आधार पर लिखा है। सहसराँ के मामूली जमीदार का दृढव्रती, कर्तव्यनिष्ठ ज्येष्ठ पुत्र फरीद अपने सद्‌गुणों , उदार चरित्र, विचारों और दूरदर्शिता के कारण किस प्रकार फरीद से शेरखाँ, शेरखाँ से शेरशाह बनकर भारत में 'सतयुग' समान राज्य का संस्थापक बना। शेरशाह नाटक की कथावस्तु इसी घटना को लेकर चली है।

5.4.3 ऐतिहासिक जीवनी नाटक -

ऐतिहासिक व्यक्तियों की आत्मकथा सम्बन्धी कथाओं पर कुछ नाटक लिखे गए है। जैसे प्रसाद जी के नाटक अधिकतर (बायग्रैफिकल) अथवा जीवनी प्रधान नाटक है। ऐतिहासिक नाटककार उन्मुक्त पंखों की उडान नहीं ले सकता। इसका कारण यह है की इनके उपर प्रतिबन्ध रहते है। स्वाभाविक विकास स्वतंन्त्र कल्पना में ही होता है। ऐतिहासिक व्यक्तियों की आत्मकथा सम्बन्धी अनेक नाटक लिखे गए है उसमें सेठ जी के भी नाटक महत्वपूर्ण हैं।

5.4.4 ऐतिहासिक नाटकों का वर्गविभाजन -

ऐतिहासिक नाटकों का प्रधान तत्व 'इतिहास तत्व' है। ऐतिहासिक नाटक किसी घटना या पात्र को लेकर चलता है। नाटककार अपनी प्रकृती और जानकारी पर निर्भर करता है कि वह उनके प्रति कितनी ईमानदारी रखे। इतिहास तत्व के प्रति बढती हुई हमारी अपेक्षा दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। घटना, वातावरण, पात्र, नियोजन यह सब इसके अन्दर आ जाता है।

1. विशुध्द ऐतिहासिक नाटक -

जब नाटक का सभी घटनाएँ तथा प्रमुख पात्र प्रामाणिक इतिहास पर आधारित हों तथा पात्रों के नाम, विशिष्ट देशकाल में उनकी पहचान, व्यक्तित्व का विस्तार, इतिहास क्रम में ही हो, तब उसे विशुध्द ऐतिहासिक कहा जा सकता है। जैसे चन्द्रगुप्त और वितस्ता की लहरे।

2. मिश्र ऐतिहासिक नाटक -

जिनमें कथानक ऐतिहासिक हो लेकिन प्रधान चरित्र काल्पनिक अथवा प्रधान चरित्र ऐतिहासिक हो और कल्पित वृत्तों में उन्हें जोडकर वातावरण द्वारा ऐतिहासिकता उत्पन्न की गई हो उसे मिश्र ऐतिहासिक नाटक कहते है । जैसे 'प्रताप प्रतिज्ञा' मिलिंद का।

3. काल्पनिक ऐतिहासिक नाटक -

इसमें कथानक और पात्र सभी अनैतिहासिक नाटककार का अपनी कल्पना से उद्‌भूत रहते है। ऐतिहासिक वातावरण निर्मित पर पात्रों के क्रिया कलाप को नियंत्रित किया जाता है और दर्शकों में ऐतिहासिक बोध उत्पन्न कराया जाता है।

5.4.5 ऐतिहासिक नाटक के गुण -

1. ऐतिहासिक घटनाओं का भले भाँति निर्वाह.
2. कथावस्तु की यथार्थता.
3. युगानुरूप वेशभूषा, रहन-सहन, वातावरण आदि.
4. पात्रों की कथोपकथन की भाषा पर अत्यंत सावधानी से ध्यान रखना।
5. नाटको में समय, स्थान तथा कार्य संकल्प का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।
6. ऐतिहासिक रस की अवतारणा - निष्कर्षत: - ऐतिहासिक श्रेणियाँ, वर्गविभाजन और ऐतिहासिक नाटकों के गुणों से हमे ज्ञात होता है कि ऐतिहासिक नाटकों की बुनियादी चीज 'इतिहास' ही है और ऐतिहासिक नाटक पूर्ण रूप से सेठ जी के सर्वश्रेष्ठ नाटक माने जाते है।

5.5 ऐतिहासिक नाटकों का कालविभाजन -

हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों की विकासात्मक रूपरेखा देखते समय समग्र नाटक साहित्य का काल के अनुरूप विभाजन करना युक्तिसंगत है। हिन्दी नाटक के प्रारंभिक काल से लेकर आज तक पूरे नाटक साहित्य को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है 1. भारतेन्दु काल 1868 ई.से. 1915 ई.तक। 2. प्रसाद - काल 1915 ई.से.1933 ई. तक। 3.प्रसादोत्तर काल 1933 ई.से.1947 ई.तक। 4.स्वातंत्र्योत्तर काल1947 ई.से.1970ई. तक।

अत: हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों की विकासात्मक रूपरेखा उपर्युक्त काल-विभाजन पर देखेंगे।

5.5.1 भारतेन्दु काल -

हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक, नाट्य रचनाओं का प्रारम्भ भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' (1880) एकांकी, गीतिनाट्य से हुआ है। डॉ. नवरत्न कपूर ने 'रत्नावली' नाटक हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक नाटक स्वीकार किया है। किन्तु यह निर्विवाद है कि यह रचना मौलिक न होकर अनुदित है। भारतेन्दु युग में राधाकृष्णदास ने 'पद्मावती' (1982) ई.में. नारी के शौर्य और बलिदान का वर्णन किया है। उनका महत्वपूर्ण दूसरा नाटक 'महाराणा प्रताप' (1897) ई. में उनकी देशभक्ति और त्याग को प्रदर्शित किया। प्रताप का चरित्र ऐसे राजपूत वीर का आदर्श चरित्र है , जो अनेक विपत्तियों को सहकर भी आत्मसम्मान नहीं छोडता।

काशीनाथ खत्री कृत्त 'तीन परम मनोहर ऐतिहासिक रूप के ' (1984) इसमें सिन्धु देश की 'राजकुमारियाँ', 'गुन्नौर की रानी', 'बलव जी का स्वप्न' संकलित है। इस काल के नाटकों पर समग्रता से विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि नाटकीय कला की दृष्टि से बहुत उच्च की रचना इस समय नहीं की जा सकी। वैसी यह स्वाभाविक ऐतिहासिक नाटक लिखने का प्रथम प्रयास था। दूसरी बात यह स्पष्ट हो जाती है कि इस काल के अधिकार ऐतिहासिक नाटक बंगाली नाटकों के अनुवाद या उनसे प्रेरणा लेकर लिखे गये है।

अत: यह स्पष्ट होता है कि भारतेन्दु- युगीन ऐतिहासिक नाटक मौलिक न होकर अनुदित है। फिर भी विषयवस्तु की दृष्टि से यह नाटक समाज को प्रेरणादायक है। भारतीय गौरव के माध्यम से देशहित की भावना को प्रचारित करने एवं समसामायिक समस्याओं के समाधान के लिए इतिहास को नाटककार ने ग्रहण किया। इतिहास प्रसिध्द पुरूष तथा नारी का चरित्र इसमें व्यक्त हुआ है। ऐतिहासिक न्याय रचना में जिस तरह की प्रामाणिकता, कल्पनात्मकता का निर्माण और वस्तु योजना की आवश्यकता होती रहती है, उसका प्राय: इन नाटककारों में प्रमुख रूप से अभाव दिखायी देता है। इसी के आधार पर हिन्दी

नाटक का विकास हुआ है। ऐतिहासिक नाटको का विकसित रूप हमें जयशंकर प्रसाद के नाट्य क्षेत्र में आगमन होते ही दिखायी देता है।

5.5.2 प्रसाद युग -

जयशंकर प्रसाद याने हिन्दी नाट्य साहित्य का कायाकल्प करनेवाले व्यक्ति माने जाते है। आधुनिक हिन्दी नाटकों का पूर्ण साहित्यिक स्वरूप इन्हीं नाटकों में दिखायी देता है। प्रसाद जी ने गंभीर ऐतिहासिक अध्ययन पर प्राचीन भारतीय गौरव और सभ्यता का चित्र उपस्थित करनेवाले नाटक लिखे। इनके कथानक महाभारत के उत्तरार्ध्द से लेकर सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल तक लिखे गये। क्योंकि यही काल भारतीय सभ्यता के गौरव का काल रहा है। प्रसाद के उपरान्त ही हिन्दी नाट्य साहित्य को नया योगदान मिला है।

प्रसाद युग याने राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक उथल-पुथल का युग माना जाता है। संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के बारेमें सोचने का प्रसाद जी ने सभी को आग्रह किया था। प्रसाद ने इसलिए प्रेरणा ग्रहण करने के लिए अतित की ओर देखा। प्रसाद मुलत: दार्शनिक थे। प्रसाद का दृढ विचार था की अखंड भारतीयता का सांस्कृतिक पुनरूत्थान यदि संभव है, तो भारतीयता के उज्वलतम उदाहरणों को ही भारतीयों के सम्मुख रखना होगा। इसके लिए प्रसाद जी प्राचीन भारत और नवीन युरोप को एक साथ लेकर चलें। अपनी इच्छा के अनुरूप प्रसाद जी ने 'राज्यश्री', (1915 ई.) 'स्कन्दगुप्त' (1922 ई.) 'अजातशत्रु' (1922 ई.) 'चन्द्रगुप्त' (1931 ई.) 'विशाख' (1921 ई.) 'ध्रुवस्वामिनी'(1933 ई.) 'एक घूँट' और 'कामना' आदि ऐतिहासिक नाटक लिखे। प्रसाद जी का 'जनमेजय का नाटक' एकमात्र पौराणिक नाटक है।

इस प्रकार प्रसाद जी ने ऐतिहासिक अनुशीलन एवं नवीन कल्पना के योग से अपनी नाट्यकला में नवीनता की उद्‌भावना की। सांस्कृतिक भावना, दार्शनिक चिन्तन, स्वाभाविकता, राष्ट्रीयता के प्रति आग्रह, संघर्षमय जीवन और अनुसंधान वृत्ति आदि बातों से वे एक महान ऐतिहासिक नाटककार माने जाते है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि प्रसाद ने अपने नाटकों में पाश्चात्य एवं भारतीय नाट्यतत्वों की संयोजना के सामंजस्य से नूतन नाट्य-शिल्प का निदर्शन किया। प्रसाद के प्रेरणा से ही उस वक्त के नाटककार ऐतिहासिक नाटकों की निर्मिती कर चुके हैं। प्रसाद का काल स्वाधीनता संग्राम का काल था। मं.गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता संग्राम चल रहा था। ऐसे समय समाज को प्रेरणा देनेवाले साहित्य की आवश्यकता थी। प्रसाद के प्रेरणा से ही हिन्दी साहित्य में अच्छे मौलिक नाटकों का निर्माण हुआ है। प्रसाद युगीन नाटककारों ने इसी माँग को पूरा करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार प्रतिभाशाली, जीवन दृष्टि की सम्पूर्णता तथा नये दृष्टिकोन के कारण हिन्दी नाट्य में प्रसाद का महत्वपूर्ण स्थान है।

5.5.3 प्रसादोत्तर युग -

प्रसादोत्तर युग में ऐतिहासिक नाटक के सृजन में गति आ गयी। प्रसाद जी के पाश्चात्य हिन्दी में तीन नाटककारों ने विशेष कार्य किया है।

1. हरिकृष्ण प्रेमी 2. उदयशंकर भट्ट - और 3. सेठ गोविन्ददास आदि।

हरिकृष्ण प्रेमी जी ने अनेक ऐतिहासिक नाटक लिखे है। उन्होंने अपने ऐतिहासिक नाटकों में मुगल कालीन राजपूती गौरव की झलक और हिन्दु-मुस्लिम एकता का चित्रण किया है। 'रक्षाबन्धन' (1934 ई.) इनका प्रसिध्द नाटक है। उनके अन्य नाटक 'शिव-साधना' (1937 ई.), 'प्रतिशोध' (1937 ई.), 'आहुति' (1940 ई.), 'स्वप्नभंग' (1940 ई.), 'छाया'(1941 ई.), 'बन्धन' (1941 ई.), 'मित्र' (1945 ई.), 'उध्दार' (1946 ई.), 'शपथ' (1951 ई.), 'कीर्तिस्तंभ' (1955 ई.), 'विदा' (1958 ई.), 'साँपों की दृष्टि' (1960 ई.), 'आन का मान' (1965 ई.) आदि ऐतिहासिक नाटक लिखे है।

उदयशंकर भट्ट ने भी हिन्दी नाट्यसाहित्य में अपना अस्तित्व बरखरार रखा है। उदयशंकर भट्ट कृत निम्नलिखित नाटक देखे जाते है - 'मुक्तिपथ' (1944 ई.), 'एक-विजय' (1946 ई.), 'दाहर' या 'सिन्ध-पतन' (1934 ई.) उनके यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रसिध्द नाटक माने जाते है।

सेठ गोविन्ददास जी के ऐतिहासिक नाटक सर्वश्रेष्ठ माने जाते है। आधुनिक हिन्दी-नाटककारों में सेठ गोविन्ददास जी का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है। उनके प्रसिध्द ऐतिहासिक नाटक निम्नलिखित है - 'हर्ष' (1935 ई.), 'कुलीनता' (1940 ई.), 'शशिगुप्त' (1942 ई.) और 'शेरशाह' (1943 ई.) उनके यह महत्वपूर्ण सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटक माने जाते है।

प्रसादोत्तर युग में उपर्युक्त नाटककारों में से सेठ गोविन्ददास जी अग्रण्य माने जाते है। सेठ गोविन्ददास के कुल मिलाकर एक सौ चार नाटक है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटककार होते हुए भी वह एक कुशल एकांकीकार उपन्यासकार के रूप में भी हमारे सामने दृष्टिगोचर हो जाते है।

इस समय में हिन्दी समस्या नाटक के जनक लक्ष्मीनारायण मिश्र को माना जाता है। 'मिश्र' नेभी ऐतिहासिक नाटक लिखे है। 'अशोक' (1936 ई.), 'गरूडध्वज' (1946 ई.), 'दशाश्वमेध' (1951 ई.), 'जगद्गुरू' (1960 ई.), 'वत्सराज' (1951 ई.), 'वैशाली में वसन्त' (1956 ई.) आदि नाटक महत्वपूर्ण माने जाते है।

प्रसादोत्तर काल के प्रमुख अन्य ऐतिहासिक नाटक इस प्रकार है। उपेंद्रनाथ अश्क कृत - 'जय पराजय' (1937 ई.), द्वारका प्रसाद मौर्य कृत - 'हैदर अली' (1934 ई.), जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी का 'तुलसीदास' (1934 ई.), सिताराम चतुर्वेदी कृत 'अनारकली' (1934 ई.), और सेनापति 'पुष्पमित्र' (1945 ई.), भगवती प्रसाद पाथरी कृत 'कालपी' (1934 ई.), धनीराम प्रेमका विरांगना पन्ना (1934 ई.), दशरथ ओझा का 'चित्तौड की देवी' (1934 ई.), कुमार हृदय का 'भग्नावशेष' (1935 ई.), यमुना प्रसाद त्रिपाठी का 'आजादी' या मौत (1936 ई.), कैलाशनाथ भटनागर का 'कुपात' (1936 ई.), गोपालचन्द्र देव का 'सरजा शिवाजी' (1937 ई.), गौरी शंकर सत्यकृत 'युक्तियज्ञ' (1937 ई.), चन्द्रगुप्त विद्यांलकार कृत 'अशोक' (1937 ई.), 'रेवा' (1938 ई.), चन्द्रशेखर पाण्डेय कृत 'रजपूत रमणी' (1935 ई.), 'मेवाड उध्दार' (1939 ई.), मिश्र बन्धु का 'शिवाजी' (1938 ई.),

परिपूर्णानन्द का 'रानी-भवानी' (1938 ई.), संत गोकुलचन्द कृत 'मीरा' (1939 ई.), बलदेव प्रसाद मिश्र कृत 'क्रान्ति' (1939 ई.), गोविन्दवल्लभ पंत का 'अत: पुर का छिद्र'(1939 ई.), शंभुदयाल सक्सेना का 'साधना पथ' (1940 ई.), हरिश्चंद्र सेठ कृत 'पुरू और अलेक्झेंडर' (1940 ई.), बैकुण्ठनाथ दुग्गल का 'श्रीहर्ष' (1941 ई.), कुँवर वीरेन्द्र सिंह का 'मर्यादा का मूल्य' (1942 ई.), रूपनारायण पाण्डेय कृत 'पद्मिनी और माखाड गौरव' (1942 ई.), भानुप्रताप सिंह का 'राज्यश्री' (1943 ई.), पाण्डेय बेचन कृत 'अमरसिंह राठोर' (1947 ई.) , सुदर्शन कृत 'सिकन्दर' (1947 ई.), विराज का 'सम्राट विक्रमादित्य' (1947 ई.) आदि ऐतिहासिक नाटक इस काल में लिखे गये।

निष्कर्षत: ऐतिहासिक नाटकों में निम्न विचार दिखायी देते है। भारतेन्दु काल के नाटक बंगाली नाटकों के अनुवाद है या उनसे प्रेरणा लेकर लिखे गये है। ज्यादातर समाज को प्रेरणादायक के रूप में प्रवृत्त होते है।

प्रसाद कालीन ऐतिहासिक नाटकों में स्वाधीनता का प्रेम, भावना, एकता की भावना, शोषण, रिश्वत की समस्या और राजनीति में नारी का पदार्पण के विचार दिखायी देते है।

प्रसादोत्तर युगीन ऐतिहासिक नाटकों के विचार स्वाधीनता संग्राम के लिए प्रोत्साहित बने थे। इसमें प्रमुख रूप से, स्वाधीनता का प्रयत्न, ऐक्य भावना, स्वार्थी-प्रवृत्ति का नाटकों के माध्यम से जनसमुदाय में उजागर किया है। इस प्रकार भारतीय समाज को प्राचीन इतिहास की चाँद दिलाकर आदर्श की ओर ले जानेवाले है। वे अत्यंत सरस और प्रेरणाप्रद ऐसे है। स्वातंत्र्योत्तर नाटकों में भी यह प्रवृत्ति दिखायी देती है।

5.5.4 स्वातंत्र्योत्तर काल -

भारतीय स्वातंत्र्योत्तर काल 1947 का हिन्दी नाट्य साहित्य के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। नाटक का विकास ज्यादातर स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ है। इस काल में नाटककारों का ध्यान रंगमंच की ओर गया और नाटक में अभिनव प्रयोगों का आरंभ हुआ।

प्रसादोत्तर काल के अनेक नाटककारों ने इस युग में ऐतिहासिक नाटक लिखे। जिनमें प्रमुख है सेठ गोविन्ददास। वैसे देखा जाय तो सेठ जी ने सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक नाटक लिखे है। प्रमुख रूप से उनके ऐतिहासिक नाटक महत्वपूर्ण माने गये है वह निम्नलिखित प्रकार से है -

जब हम सेठ जी के ऐतिहासिक नाटकों की तुलना प्रसाद के नाटकों के साथ करे तो यह स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक चरित्रो द्वारा राष्ट्रीयता की उदात्त भावना को संवादित करने का प्रयत्न किया और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता दिखाकर आत्मगौरव को जगाया, ठिक उसी प्रकार सेठ जी ने भी प्राचीन संस्कृति की श्रेष्ठता तथा अतित की उज्वलता को प्रदर्शित करके देश की संस्कृति, निष्ठा और राष्ट्रीय भावना को जगाने का प्रयत्न किया है। इसलिए दोनों ने भी भारतीय इतिहास में गौरवपूर्ण अंशों को अपने नाटकों का कथानक बनाया है। राष्ट्रीयता, जन संगठन की चेतना, समानता और आदर्श कल्पना का चित्रण इन नाटकों में प्रमुख रूप से दिखाया है। स्वातंत्र्योत्तर काल के ऐतिहासिक नाटकों के बारे में डॉ. दशरथ ओझा लिखते है, ''इस काल के ऐतिहासिक नाटकों में जनता को सदाचारी, कर्मठ, देश के गौरव के अनुरूप बनाने का प्रयास पाया जाता है। नाट्यकारों का ध्यान देश को विश्व में गौरवशाली बनाने की ओर अधिक रहा है।''[7]

समग्र हिन्दी के ऐतिहासिक नाटको में इतिहास के चरित्रों तथा घटनाओं को लेकर वर्तमान जीवन को दिशा देने का कार्य नाटककारों ने किया है। ऐतिहासिक नाटक की कथावस्तु भले ही इतिहास से संबंधित हो उसमें शाश्वत सत्य रहता है। जिसका संबंध वर्तमान कालीन एवं भविष्यकालीन मानव जीवन से बराबर रहता है। ऐतिहासिक नाटककार इतिहास के माध्यम से वर्तमान पर प्रकाश डालने का कार्य करते है।

प्रसादोत्तर काल में हरिकृष्ण प्रेमी ने भी स्वातंत्र्योत्तर काल में कई ऐतिहासिक नाटक लिखे। ''पंजाब में ज्ञान बौसुरी और कर्म का शंख फुँकनेवाली बहन कुमारी

लज्जावती ने एक बार मुझसे कहा था कि हमारे भारतीय साहित्य में हिन्दुओं और मुस्लिमों को एक दूसरे से दूर करनेवाली पुस्तके तो बहुत बढ रही है। उन्हें मिलाने का प्रयत्न बहुत थोडे साहित्यकार कर रहे है। तुम्हें इस दिशा में प्रयत्न करना चाहिए। इसी लक्ष्य को सामने रखकर उन्होंने मुझे ऐतिहासिक नाटक लिखने का आदेश दिया।"[8]

हरिकृष्ण प्रेमी कृत 'उध्दार' (1949 ई.), वृन्दावनलाल वर्मा का 'फुलों की बोली' (1947 ई.), विष्णू प्रभाकर कृत 'समाधि' (1954 ई.),पाण्डेय बेचन शर्मा कृत 'अन्नदाता' (1958 ई.),मोहन राकेश कृत 'आषाढ का एक दिन' (1958 ई.), सत्येन्द्र पारीक का 'प्यासी दरिया' (1971 ई.) आदि अनेक ऐतिहासिक नाटक स्वातंत्र्योतर काल में लिखे गये।

निष्कर्षत:-

स्वतंत्रता के पहले ऐतिहासिक नाटकों का उद्देश्य स्वाधीनता की प्रेरणा दिलाता था, किन्तु स्वातंत्र्योत्तर नाटकों का प्रधान उद्देश्य जनता में स्वराष्ट्र के प्रति हमें सचेत करना है। राष्ट्रीय एकता, जनसंगठन की चेतना और आदर्श कल्पना आदि के विचार दिखायी देते है।

समग्र हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों मे इतिहास के चरित्रों तथा घटनाओं को लेकर वर्तमान जीवन को दिशा देने का कार्य नाटककारों ने किया है। ऐतिहासिक नाटक की कथावस्तु भले ही इतिहास से संबंधित हो उसमें शाश्वत सत्य रहता है। जिसका संबंध वर्तमान कालीन एवं भविष्यकालीन मानव जीवन से बराबर रहता है।

5.6 ऐतिहासिक नाटकों की विशेषताएँ -

कोई भी नाटक हो या कहानी उसके कुछ न कुछ अलग अपना महत्व रहता है। ऐतिहासिक नाटक समूल होने के लिए अनेक विशेषताएँ होना जरूरी है। जिस युग पर आधारित नाटककार नाटक निर्माण करना चाहता है उस युग के वातावरण ऐतिहासिक सत्य का पालन, ऐतिहासिक चरित्र-चित्रण, बदलती हुयी धारणाएँ, काल्पनिक प्रसंग और योग भाषा का प्रयोग करना महत्वपूर्ण माना है। इसलिए हमें ऐतिहासिक नाटक सफल बनाने के लिए उसके निजी विशेषताओं को देखना सबसे महत्वपुर्ण बात है।

5.6.1 विषय वस्तु का आधार इतिहास -

इतिहास का शाब्दिक अर्थ बताते हुए रामनारायण सिंह ने लिखा है, "इतिहास का अर्थ है, ऐसा ही था, या ऐसा ही हुआ।"[9] इसका अभिप्राय यह हुआ कि इतिहास में घटनाओं का यथार्थ वर्णन होता है। इस दृष्टि से अतित के किसी भी वास्तविक विवरण को इतिहास की संज्ञा दी जा सकती है।

ऐतिहासिक नाटकों की विषयवस्तु इतिहास पर आधारित होती है। इसमें ऐतिहासिक कथा रचना के लिए यह आवश्यक है कि ऐतिहासिक नाटककार इतिहास के जिस युग से कथा के सुत्र ले रहा हो, उस युग की पृष्ठभूमि और वातावरण का भली प्रकार अध्ययन करें। ऐतिहासिक नाटक में इतिहास तथा वर्तमान का तथ्य यथार्थ और कल्पना का संतुलित समन्वय होना चाहिए और ऐतिहासिक विकास के किसी भी युग से कथा का चयन क्यों न किया गया हो उस युग की पृष्ठभूमि और विवरण कथा के निर्वाह एवं विकास के लिए आवश्यक होता है।

5.6.2 युगीन पृष्ठभूमि और वातावरण का चित्रण -

हिन्दी के नाटक के क्षेत्र में ऐतिहासिक कथा की जो प्रवृत्ति मिलती है, उसका आरम्भ तो भारतेन्दु युग में ही हो चुका था। परन्तु आधुनिक में अनेक नाटककारों ने श्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटक की रचनाकार इस विधा के महत्व को सिद्ध किया है।

ऐतिहासिक नाटककारों को वर्णित देशकाल के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करना पडता है। पर हमारे कहने का अभिप्राय यह नही हैं, नाटककार उस युग की भाषा का प्रयोग करें। किन्तु नाटक की कथा जिस युग की है उसी ओर रीति-रिवाजों आदि का वर्णन करते समय भी ऐतिहासिकता की पूर्ण रक्षा करनी चाहिए और वह अपनी कृतियों में ऐसी बातों का उल्लेख न करें तो देशकाल के विरूध्द हो। ऐतिहासिक नाटक में कल्पना का होना आवश्यक माना है, ऐसा अगर नहीं तो इतिहास से जैसे का तैसा लेना याने पूरी यथार्थता है तो वह नाटक, नाटक न रहकर वह केवल इतिहास माना जायेगा।

युग के साथ-साथ युग के वातावरण को भी अधिक महत्व है। वातावरण की यर्थाथता पात्रों को पूर्णतया उजागर कर दे और पात्र वातावरण के अनुकुल रहते हुए उसके योग से उद्‌घाटित विकसित होते रहें। पात्र और परिस्थितियों की यह समन्वित स्वयं ही तत्कालीन समाज प्रवाह के वेग को व्यक्त कर देगी। पात्रों के साथ-साथ जिस काल की कथा पर नाटक लिखा जा रहा है, उसी देशकाल तथा वातावरण प्रस्तुत करना ही ऐतिहासिक नाटक की सफलता और अनिवार्यता है।

5.6.3 इतिहास और वर्तमान का संबंध -

नाटक और इतिहास के परस्पर संबंध का प्रश्न नाटक के इतिहास पर निर्धारित रहता है। अर्थात ऐतिहासिक नाटक की दृष्टि से उठता है। इतिहास की परिभाषा देते हुए सत्यपाल चुहा लिखते है, ''वस्तुत: इतिहासकार और इतिहास के तथ्य एक दूसरे के लिए आवश्यक है। इतिहास बिना ऐतिहासिक तथ्यों के निर्मूलन तथा तथ्य के बिना इतिहासकार निरर्थक है ।''[10]

वर्तमान युग में इतिहास को कुछ विद्‌वान विज्ञान तो कुछ विद्‌वान कला मानते हैं। इतिहास पूर्णतया विज्ञान नहीं है, और न तो मात्र घटनाओं का संतुलन तथा महान पुरूषों की गाथा है। बल्कि वह मानवीय सत्यों की खोज है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य के विगत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन से स्थापित किया जाता है।

5.6.4 यथार्थ और कल्पना का समन्वय -

ऐतिहासिक नाटकों की कथावस्तु इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित रहती है। इसकी सबसे बडी विशेषता देशकाल चित्रण है। देशकाल के चित्रण से अभिप्राय यह है कि जिस देश अथवा स्थान का और इतिहास के जिस कालखंड का वर्णन हो, वह उचित, यथार्थ और ठीक होना चाहिए अर्थात ऐतिहासिक नाटककार को वर्णित युग और स्थान विशेष को संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियाँ रहन-सहन और रीतिरिवाजों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए तथा उसमें अपूर्व कल्पना शक्ति भी

आवश्यक है। हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद जी को ऐतिहासिक नाटक लिखने में विशेष रूप से प्रसिध्दि प्राप्त हुई है। स्कन्दगुप्त के 'एक घूँट' और 'कामना' ऐतिहासिक प्रसिध्द नाटक माने जाते है।

इतिहासकार का आधार भौतिक सत्य और नाटक का आधार है कल्पना। साधारण तौरपर इन दोनों में बहुत अंतर दिखायी पडता है। किन्तु इस अन्तर को ऐतिहासिक नाटककार कम करके मेल स्थापित करता है। ऐतिहासिक नाटककार को अन्य नाटककारों की अपेक्षा अत्याधिक सतर्क रहना पडता है।

5.6.5 ऐतिहासिक पात्रों का चित्रण : चरित्र चित्रण में यथार्थ और कल्पना का समन्वय

ऐतिहासिक नाटकों में पात्र-योजना कथानक की आवश्यकता नुसार ही को जाती है। पर पात्र-योजना चाहे जिसप्रकार की हो पात्रों का चयन जीवन के यथार्थ से होना चाहिए। यदि यथार्थ-जीवन से सम्बन्धित नाटक में पात्र हो तो नाटक को निश्चित ही सफलता प्राप्त हो जाती है। नाटक में पात्र हो तो नाटक में सजीवता आ जाती है। नाटक में जो प्रमुख पात्र होते है उनके कार्यो पर ही नाटक की सफलता अवलम्बित रहती है।

ऐतिहासिक नाटकों में चरित्र-चित्रण का सम्बन्ध, प्रमुख पात्रों का इतिहास सिध्द होना आवश्यक माना है। उन पात्रों के कार्यकलाप का भी अधिकांश भाग ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक होना चाहिए। चरित्रों के सम्बन्ध में यथार्थता और कल्पनात्मकता का प्रश्न गंभीर रूप से विचारणीय हो जाता है। ऐतिहासिक नाटककार किसी पात्र को इतिहास में मिलनेवाले सामान्य विवरण के आधार पर प्रस्तुत करता रहता है। इसी कारण नाटककार जैसा भी स्वरूप प्रस्तुत करता है, उसे यथार्थ मान लेते है।

5.6.6 ऐतिहासिक नाटक का संबंध अतीत की घटना, पात्रों के प्रसंगों से होता है

ऐतिहासिक नाटक लिखते समय नाटककार को पात्रों की तिथियों तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। ऐतिहासिक नाटकों का संबंध बीते काल की घटनाओं, चरित्रों और वातावरण से रहता है। इतिहास घटनाओं की एक सामान्य चर्चा मात्र करता

है,लेकिन नाटककार मानव के युगीन जीवन के कंकाल को जीवन प्रदान करता है। जिसके द्वारा मानव की महानता और उसके जीवन का अभिशाप पक्ष दोनों मुखर हो उठते है।

इतिहास में ऐतिहासिक व्यक्ति की सामान्य चर्चा होती है। इतिहास को विकृत करने का नाटककार को अधिकार नहीं होता, परन्तु इतिहास घटनाओं का चौखटा (परिवर्तन)बदलता मात्र हैं। ऐतिहासिक व्यक्ति के शील के अनुसार कल्पना के द्वारा रंग भर के चित्र खींचा जाय तो इतिहास है। सामान्यत: नाटककार ऐतिहासिक पात्रों के जरिए से घटना को अपनी कल्पना से पुन: निर्माण करता है,वही सच्चा ऐतिहासिक नाटककार है।

5.6.7 ऐतिहासिक पात्रों, घटनाओं, तिथियों को आधार बनाया जाता है -

अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना या आधुनिक युग के आरमान को प्रस्तुत युग में ऐतिहासिक नाटककारों के लिए सन 1857 ई. की क्रान्ति विशेष महत्वपूर्ण घटना रही है। कुछ पात्र प्रसंग इस घटना की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के उपकरण रहे है और कुछ इसके सीधे भागीदार बनकर गौरव के अधिकारी बन गए हैं।

सुप्रसिध्द ऐतिहासिक नाटककारों ने सन 1857 ई. को क्रान्ति तथा पात्रों को लेकर नाटक लिखे है। तत्कालीन देशभक्ति राष्ट्रीय एकता और वीरों की जीवन की कहानी नाटकों की विषयवस्तु रही है। सन 1857 ई. की महाक्रान्ति आधुनिक भारत के इतिहास की प्रमुख घटना है। इस घटना पर आधारित लिखे गए अनेक नाटकों की सूची उपर्युक्त विवेचनों की है।

5.7 इतिहास और ऐतिहासिक नाटक -

सामान्यत: इतिहास का अर्थ है 'इति + ह + आस' अर्थात यह ऐसा हुआ और वह घटना का यथार्थ वर्णन करता है। जब की नाटक कल्पना का रोचक और रम्य विकास है। यदयपि इतिहासकार और ऐतिहासिक नाटककार प्राय: अतित का ही वर्णन करते हैं और उनकी विचारधारा प्रचलित तथ्यों पर ही आधारित रहती है, पर दोनों के दृष्टिकोन में विभिन्नता सी है। सामान्यत: इतिहासकार तथ्यों और उनके कारणों की दृष्टि में रखकर

अनुमान या तर्कद्वारा उन्हें श्रृखंलाबध्द करता है तथा तथ्यों और कारणों के आधार पर सम्बन्धित विस्तृत घटनाओं का अनुमान लगाता है। लेकिन कल्पना और व्याख्या का कार्य उसके क्षेत्र में नहीं है। वह तो केवल अनुसंधान कर परिस्थिति और घटना का चित्रण मात्र करता है, उनका निर्माण नहीं। इस प्रकार उसके लिए बाह्य घटनाएँ ही मुख्य है और वह व्यक्ति की अपेक्षा राष्ट्र को ही प्रमुखता प्रदान करता है तथा आंतरिक भावनाओं के वर्णन से स्वंय को यथासम्भव बनाने का प्रयत्न करता है।

इसके विपरित ऐतिहासिक नाटककार तथ्यों का आधार ग्रहण करते हुए भी कल्पना और व्याख्या का प्रयोग स्वतंत्र रूप से करने के लिए स्वतंत्र है। तथा वह वैज्ञानिक की तरह परिस्थितियाँ उत्पन्न कर उन्हें सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त बनाता है। वह जीवन के अधिक समीप जाता है और वह मानव-जीवन के आवश्यक व्यक्ती के उल्लेखनीय अव्यक्त को व्यक्त करता है, पर इतिहासकार व्यक्त का केवल वही अंश ग्रहण करता है, जो राष्ट्र और जमीन के उत्थान से सम्बन्धित है। यहाँ यह ध्यान रखना है कि कल्पना के विशाल क्षेत्र में स्वतंत्रतापूर्वक विवरण करते समय ऐतिहासिक नाटककार इतिहास के प्रति उदासीन नहीं रह सकता है और उसकी कुशलता तो इसी बात में है कि वह दोनों मुख्य तत्वों इतिहास और नाटक को ऐसे घुलेमिले रूप में प्रस्तुत करें, जैसे दूध और शक्कर।

इतिहासकार किसी विशिष्ट चरित्र के प्रति आकर्षण दिखाते हुए भी उन्हें यथाक्रम रखने की चेष्टा करता है। घटना से यथासंभव वह तटस्थ ही रहता है। तथ्यों के अन्वेषण की ऐतिहासिक प्रक्रिया बुध्दिपरक होती है, भावपरक नहीं।

इतिहास उन वस्तुओं का उल्लेख करता है जो समाप्त हो चुकी है और नाटक उन घटनाओं का संकेत भी देता है जो घटित हो सकती है। समष्टिपरक होने के कारण नाटक इतिहास की अपेक्षा अधिक सत्य और उपयुक्त है। इतिहास जहाँ अपूर्ण होता है वहाँ ऐतिहासिक नाटक कल्पना के आधार पर उसे भरने की कोशिश करता है। ऐतिहासिक नाटकों में दो प्रकार की उपलब्धियाँ होती है -

1. "इतिहास के माध्यम से विस्तृत जीवन और जगत का प्रत्यक्षीकरण होता है।

2. कला के माध्यम से मानवीय प्रवृत्तियों, विशेष क्षणों में किए गए आचरणों का अनुभव होता है।"[11]

इतिहास छाया की भाँति स्थिर है, अपरिवर्तनीय है और ऐतिहासिक नाटक जल की तरह गतिमान परिवर्तनीय है। ऐतिहासिक नाटक वही समझा जाता था, जो इतिहास के उद्देश्यों को पूरा करें। नाटककार इतिहास लिखने नहीं बैठता, उसका प्रमुख अभिप्राय नाट्यरचना होती है। इतिहास और ऐतिहासिक नाटकों की पारंपारिक निर्भरता हमेशा बनी रहती है। सभी ऐतिहासिक नाटक इतिहास नहीं है और सभी इतिहास ट्रेजडी है।

इस प्रकार अंत में हम कह सकते है कि इतिहास और ऐतिहासिक नाटकों का गहरा संबंध है।इतिहास के आधार पर कथावस्तु में भी प्रभावात्मकता दिखायी देती है। ऐतिहासिक नाटक, इतिहासकार और नाटककार दोनों की निर्मितीयों का एकीकरण होता है।

5.8 ऐतिहासिक नाटकों का उद्देश्य -

प्रत्येक रचना में रचनाकार का एक उद्देश्य रहता है। यदि वह पहले से कोई उद्देश्य बनाकर नहीं बैठा तो अंत में तो सोचता है। बिना उद्देश्य के रचना हीन लगती है और उसे कोई महत्व नहीं रखता। सिर्फ मनोरंजन के लिए नाटकों का निर्माण नहीं हुआ बल्कि उससे अच्छे आदर्श महापुरूषों के चरित्रों से समाज-प्रबोधन का कार्य बडी रफ्तारसे चल रहा है। आज-कल तो हम आधुनिक जमाने में हमें देखने को मिलता है कि कोई भी दृश्य देखने के पश्चात हम उसको फौरन आत्मसात कर लेते है। नाटक दर्शक को मग्न कर उसे मंत्रमुग्ध बना देता है और अच्छे विचारों का उसके मनपटल पर बिंबने का कार्य नाटककार करता है। ऐतिहासिक नाटकों की प्रवृत्तियाँ दो प्रकार की होती है -

1. राष्ट्र स्वतंत्र,समाज उन्नत, जन-जीवन सम्पन्न और

2. राष्ट्र परतंत्र समाज विश्रृंखल, जनजीवन समस्त रहा है।

ऐतिहासिक नाटकों की रचना कभी वर्तमान समस्याओं को मुखरित करने के लिए हुई, कभी इतिहास को पुननिर्मित करने के लिए ऐतिहासिक नाटकों का निर्माण हुआ।

अतित का अर्थ - जिससे वर्तमान को गति मिल सके और भविष्य का संकेत दे यह भी ऐतिहासिक नाटकों का उद्देश्य रहता है।

ऐतिहासिक नाटककार सेठ जी ऐतिहासिक कथावस्तु को आधार बनाकर विवेच्य नाट्य निर्मिती निम्नलिखित उद्देश्य लेकर की है - 1. ''इतिहास को पुननिर्मित करने की आकांक्षा, 2. अतित के सांस्कृतिक चित्रण की भावना, 3. राष्ट्रीय चेतना, जातीय गौरव आदि से प्रेरित होकर इतिहास के आदर्श चरित्रों की स्थापना, 4.वर्तमान जटिलताओं से बचने के लिए अतित में पलायन, 5. वर्तमान समस्याओं का अतीत के माध्यम से प्रस्तुतीकरण और उनका समाधान निकालने की चेष्टा आदि।''[12]

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त उद्देश्यों से ऐतिहासिक नाटकों का निर्माण किया जाता है। ऐतिहासिक नाटककार कल्पनात्मक तटस्थता से अतीत को देखता है। अतित की सांस्कृतिक एवं सामाजिक झलक देने के लिए भी ऐतिहासिक नाटकों की रचना की जाती है। सेठ जी के नाटकों का प्रमुख उद्देश्य देश को स्वाधीन बनाना, राष्ट्रीय एकात्मता प्रस्थापित करना और आदर्शवाद का प्रसार करना है।

5.9 ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ -

इतिहास शब्द के तात्पर्य के पश्चात अब हम ऐतिहासिक एवं ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ देखेंगे -

1. 'संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर' -में ऐतिहासिक परिभाषा इस तरह प्रस्तुत की गयी है-
    1. इतिहास सम्बन्धी/जो इतिहास में है।
    2. जो इतिहास मानता हो।

    ऐतिहासिकता - स्त्री (सं.)

    1. ऐतिहासिक होने का भाव /
    2. प्राचीनता।''[13]

2. 'संस्कृत हिन्दी कोश' में ऐतिहासिक - (वि) (स्त्री-को) (इतिहास-ठक)

1. परंपरा प्राप्त 2. सम्बन्धी - इतिहास - क.1. इतिहासकार वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्याओं को जानता है या अध्ययन करता है।''[14]

5.10 विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता -

सेठ जी बहुमूखी प्रतिभा संपन्न सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटककार है। हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह इन प्रधान पात्रों के आदर्श चरित्रों द्वारा सेठ जी हमारे सामने राष्ट्रीय एकात्मता, विश्वबन्धुत्व की भावना, स्वाधीनता और सर्वधर्म समभाव, एक साम्राज्य की स्थापना करना चाहते है। इतिहास और नाटक की कलात्मक समन्वय की रसात्मक अभिव्यक्ति ऐतिहासिक नाटक है। इतिहास राष्ट्र को समग्र सचेतना का पुंजीभूत रूप होता है। राष्ट्र की गौरवमयी परम्पराओं को अक्षुण्ण बनाये रखने की दृष्टि से इतिहास का सर्वोपरि महत्व है। इतिहास का कलात्मक आकलन ऐतिहासिक नाटकों में होता है। संवेदना के अपूर्व क्षमता के कारण ऐतिहासिक नाटक इतिहास के प्रति दर्शकों अथवा पाठकों की अभिरूची को बल प्रदान करता है। इतिहास सत्य होता है और ऐतिहासिकता काल्पनिक होती है। इतिहास के आधार पर ही विवेच्य नाटकों की ऐतिहासिकता की विशेषताएँ हम देखेंगे -

5.10.1 विषय वस्तु का आधार इतिहास -

हर्ष नाटक की कथावस्तु सुसंगठित है और इतिहास श्रृंखलाबध्द है। हर्षवर्ध्दन के समय को जो सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थिति का वर्णन इसमें किया है। हर्ष नाटक इतिहास पर आधारित है। बीती हुई बातों पर कल्पना के जोर पर हर्ष के आदर्श चरित्रों द्वारा सेठ जी हमें अच्छी राह या पथप्रदर्शन करते है। हर्ष नाटक द्वारा सेठ जी ने उस युग का जीता जागता चित्र मानव नेत्रों के सम्मुख उपस्थित किया है। राजनीतिक क्षेत्र में उस समय सम्राटों और साम्राज्य का महत्व था। हर्षवर्ध्दन के वंश का उत्थान हो रहा था और गुप्तवंश का पतन हो चुका था। हर्ष के प्रतिद्वन्दी गुप्तवंशी शशांक नरेन्द्रगुप्त थे। धार्मिक क्षेत्र में आर्य और बौध्द धर्मो का संघर्ष था। सामाजिक क्षेत्र में हर्ष राजा अपनी

विधवा बहन को सम्राज्ञी बनाकर एक नया दृष्टिकोन नारी के प्रति उठा दिया था। हर्ष नाटक में कोरा इतिहास नहीं है बल्कि ऐतिहासिक होते हुए भी यह आधुनिक राजनीति एवं परिस्थिति का ज्ञापक है।

शशिगुप्त नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी नवीनतम जानकारी, मनोरंजन और इतिहास की जानकारी में भी वृध्दि होती है। शशिगुप्त में प्राचीन युरोपीय इतिहासकार के सिकन्दर सम्बन्धी वृतान्त और साथ ही बृहत तथा मुद्राराक्षस में सुरक्षित चाणक्य और चन्द्रगुप्त सम्बन्धी कथाओं का भी इस नाटक में बडी कुशलता से प्रयोग किया गया है। सिकन्दर सम्बन्धी अब तक की सब खोजों को चुनौती देकर नयी मान्यताएँ स्थापित की है। इसमें चित्रित राष्ट्रीय-नैतिक चेतना सेठ गोविन्ददास जी के हृदय की सच्ची पुकार है। यह नाटक प्राचीन इतिहास पर आधारित है। प्राचीन राजनीति और देशसेवा के मार्ग में उन्हें जो अनुभव प्राप्त हुआ है तथा उनकी जो राष्ट्रीय विचारधारा है, देश गौरव, स्वाभिमान, विद्रोही, क्रान्तिकारी भावनाओं से ओतप्रोत है। भारत के प्राचीन वीरों के आदर्श, शौर्य, देशभक्ति और स्वातन्त्र प्रेम के चित्रण और इतिहास का आधार विषयवस्तु होने कारण नाटक सफल बना है।

'शेरशाह' नाटक में भारत के इतिहास में मुस्लिम युगों का चित्रण किया है। जब एक साधारण नवयुवक ने दृढ प्रतिज्ञा साधना का व्रत लेकर भारत का नक्शा ही बदल दिया। साम्प्रदायिकता की उलझनों में पहली बार इतिहास में गुलामगिरी से मुक्त होकर आदर्श स्थापित शेरशाह ने किया है अत: शेरशाह नाटक का उद्देश्य राष्ट्रवाद की प्रतिष्ठा है।

5.10.2 विवेच्य नाटको में इतिहास और वर्तमान का समन्वय -

'हर्ष' नाटक में इतिहास और वर्तमान का परस्पर समन्वय दिखायी देता है। उस युग के महान पुरूष, आदर्श चरित्रों और सामाजिक परिस्थिति का वर्णन इतिहास के आधार पर दिखायी देता है। हर्ष प्राचीन प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली पसन्द करता है। उस वक्त की राजनीतिक स्थिति, शशांक और आदित्यसेन की हर्ष के प्रति कूटनीति, विधवा

नारी की समस्याएँ, आर्य और बौध्द धर्मों का संघर्ष इस नाटक में इतिहास का आधार लेकर कल्पना के जोर पर सेठ जी ने प्रस्तुत किए है। लेकिन आज भी वह आधुनिक वर्तमान युग में हमें सारी उपर्युक्त समस्याएँ देखने को मिलती है। तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक वातावरण और स्थिति, व्यवस्था का चित्रण आज हमें वर्तमान युग में दिखायी देता है। निष्कर्षत: हम कह सकते है कि इतिहास में बीता हुआ हर्ष का आदर्श चरित्र, आदर्श राज्य प्रणाली, नवीन संगठन, सार्वजनिक हित और देशी-विदेशी राजाओं से परस्पर मैत्री के सिध्दान्तों को आज भी हमें स्वीकार करना चाहिए।

शशिगुप्त नाटक में शशिगुप्त, हेलन और चाणक्य इन पात्रों के जरिए से नयी खोजों और नये ऐतिहासिक दृष्टिकोन पर यह नाटक आधारित है। इसमें इतिहास को काल्पनिक रूप देकर विविध ऐतिहासिक घटनाओं का सेठ जी ने उल्लेख किया है। साथ ही साथ इतिहास और वर्तमान का संबंध किस प्रकार है यह बताने का प्रयास किया है। "लेखक ने समस्त ऐतिहासिक तथ्यों को एक साथ नाटक की विषयवस्तु में विन्यासित करना चाहा है। नाटककार ने एक बहुत बडे क्षेत्र में बिखरी कथा को नाटक के शिल्पतन्त्र में समेटा है... जिन ऐतिहासिक मान्यताओं को नाटक रूप में शिल्पित करने के लोभ को लेकर वह चला है, उसमें उसे पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हुई है।"[15] इस प्रकार हमेशा इतिहास का आदर्श लेकर ऐतिहासिक दृष्टिकोन पर वर्तमान युग में भी हमें हमेशा कार्यरत रहना चाहिए।

'शेरशाह' नाटक में इतिहास की उथल-पुथल, युध्द आक्रमण आदि अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का संमिश्रण इसमें इतिहास रस प्रचुरता से नाटक की कथावस्तु इतिहास से ली गयी है परन्तु वर्तमान का समन्वय दिखायी दिया है।

निष्कर्षत: विवेच्य नाटकों में सेठ जी भारत-पाकिस्तान, हिन्दू-मुस्लिम में एकता प्रस्थापित करना चाहते है। भारतीय मुसलमानों का शेरशाह प्राचीन कल्पना को लेकर वर्तमान युग में पथ-प्रदर्शन करता है। यदि भारत-पाक युध्द हो जाये तो हर एक भारतीय

मुस्लिम अपने वतन के लिए जान कुर्बान करे। इस तरह शेरशाह का राष्ट्रवादी आदर्श हमारे सामने हमेशा आकाशदिप की तरह चमकता है।

5.10.3 यथार्थ और कल्पना का समन्वय -

सेठ गोविन्ददास जी के 'हर्ष' नाटक में सातवीं सदी का ऐतिहासिक वातावरण बडी अच्छी तरह समाविष्ट है। उस समय की धार्मिक ओर राजनीति के अवस्था का दिग्दर्शन इतिहास तथा साहित्य प्रेमियों के लिए आज भी बडा महत्व रखता है। हर्ष नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी आधुनिक युग में अपना अलग महत्व रखता है। उस वक्त नारी समानता और आपसी संघर्ष को लुप्त करने का महान विचार हमें आज यथार्थ रूप से हमारे सामने आ गया है। 'हर्ष' नाटक सेठ जी का आधुनिक व्यवहारपयोगी माना जाता है। उस वक्त की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक वातावरण का वर्णन सेठ जी हर्ष नाटक द्वारा करते है। राजनीतिक क्षेत्र में गुप्तवंश और वर्ध्दनवंश इन दोनों में संघर्ष, आर्य और बौध्द का धार्मिक संघर्ष दिखायी देता है। समाज में विधवा स्त्री को बिल्कुल ही किसी मंगलकार्य में भी नहीं बुलाया जाता था। इसी कारण हर्ष राजा अपनी बहन राज्यश्री को स्थाण्वीश्वर की सम्राज्ञी बनाता है। इसका चित्रण सेठ जी ने अपने कलाओं द्वारा सुंदर और सजीव चित्रण 'हर्ष' नाटक में किया है।

शशिगुप्त यह एक मौलिक रचना और नवीनमय का ज्ञान संग्रह है। नयी खोजों और नये ऐतिहासिक दृष्टिकोन पर यह नाटक आधारित है। इसमें यथार्थ और कल्पना का समन्वय दिखायी देता है। शशिगुप्त इतिहास का आधार लेकर भौतिक सत्य को खोजता है और कल्पना के बलबुते पर एक साम्राज्य की स्थापना शशिगुप्त करना चाहता है।

'शेरशाह' नाटक में सेठ गोविन्ददास जी ने उस वक्त की युगीन परिस्थिति का वर्णन करके हमारे सामने वर्तमान युग में हमे सर्वधर्मसमभाव, राष्ट्रीय एकात्मता, स्वाधीनता और कल्पना के जोर से उसे आत्मसात करने में शेरशाह को पूर्ण रूप से सफलता मिली है। निष्कर्षत: हम कह सकते है कि ऐतिहासिक नाटको में यथार्थ और कल्पना का समन्वय

होना बहुत जरूरी है। साथ ही साथ इस विशेषता के आधार पर सेठ जी को इतिहास का आधार लेकर ऐतिहासिक नाटकों की निर्मिती करने में सफलता मिली है।

5.10.4 सेठ गोविन्ददास के नाटकों में ऐतिहासिक पात्र -

हर्ष नाटक में सेठ गोविन्ददास जी के हर्षवर्ध्दन, शशांक नरेन्द्रगुप्त और माधवगुप्त यह ऐतिहासिक पात्र है। सेठ गोविन्ददास ने ऐतिहासिक पात्रों का वर्गीकरण किया है। शासक वर्ग, अधिकारी वर्ग, महापुरूष वर्ग और विदेशी पात्र आदि। शासक वर्ग में हिन्दु राजा, मुस्लिम-बादशाह और विदेशी के सम्राटों को वर्णन दिखायी देता है। "हर्ष नाटक के ऐतिहासिक पात्र में लोककल्याण की भावना, परंपरा के प्रति निष्ठा, अहिंसा, शिष्टाचार की भावना, गुण-ग्राहकता, राष्ट्रीयता, राज्य की विस्तार-भावना, ऐक्य-भावना, धार्मिक सहिष्णुता, विश्वमैत्री और अस्पृश्यता निवारण आदि गुण दिखायी देती है।"[16] अधिकारी वर्ग में आवन्ती का 'हर्ष' नाटक में चित्रण किया है। ऐतिहासिक नाटको में ऐतिहासिक पात्र महापुरूष वर्ग का प्रतिनिधित्व शिलादित्य (हर्ष) ने किया है। ऐतिहासिक पात्रों में त्याग, तप, संयम, मानव कल्याण आदि गुण दिखायी देते है।

शशिगुप्त शासकवर्ग में हिन्दू-राजा के रूप में प्रमुख ऐतिहासिक पात्र है। अधिकार वर्ग के रूप में चाणक्य हमारे सामने दृष्टिगोचर होता है। साथ ही साथ विदेशी पात्र सिकन्दर और सिल्यूकस भी अपने अलग गुणों को लेकर इस नाटक में प्रस्तुत होते है। इन पात्रों के जीवन संबंधी यथार्थ चित्रण हमें देखने को मिलता है। चरित्रों के सम्बन्ध में यथार्थता और कल्पनात्मकता का सवाल गंभीर रूप से सेठ जी ने प्रस्तुत किया है। शशिगुप्त को आदर्श पात्र के रूप में सफलता मिली है।

शेरशाह मुस्लिम बादशाह और उस युग का प्रतिनिधत्व करनेवाला शासकवर्ग का प्रमुख पात्र है। शेरशाह में हुमायूँ का स्थान भी अनन्य साधारण महत्व रखता है। हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह यह प्रमुख नायक है। इसके प्रतिस्पर्धी है मगर वे राजनीति से सम्बधित है। ऐतिहासिक पात्रों मे स्त्री पात्र निम्नलिखित है -

(1) राज्यश्री और जयमाला हर्ष नाटक में कर्तव्य परायण, आदर्श महिला और वह सात्विक गुणों से पूर्ण रमणी है।

(2) हेलन शशिगुप्त नाटक में प्रेमिका के रूप में अपना प्रेम अपने पिता के पास व्यक्त करती है और वह एक देशभक्त नारी है।

(3) लाड्बानू शेरशाह नाटक में निजाम की प्रेमिका के रूप में और अपने पाकदिल की मुहब्बत के लिए हमेशा तडपनेवाली नारी है। दौलत होने के कारण कभी ताजखाँ , कभी शेरशाह लेकिन सच्चा प्यार नहीं मिला। इसी कारण वह असंतुष्ट है।

5.10.5 विवेच्य नाटकों मे ऐतिहासिक घटना और ऐतिहासिक तिथियाँ -

सेठ गोविन्ददास जी का ऐतिहासिक अध्ययन अधिकतर प्राचीन भारतीय इतिहास से सम्बधित है। उस वक्त की ऐतिहासिक घटना और तिथियाँ विवेच्य नाटकों मे देखने को हमे मिलती है। 'हर्ष' नाटक में सभी प्रमुख पात्र तिथियाँ और घटना का सेठ जी ने वर्णन किया है। 'हर्ष' नाटक की घटना वर्ध्दनवंश और गुप्तवंशज से सम्बन्धित है। सातवी शताब्दी वर्ध्दनवंश का साम्राज्य था।'हर्ष' नाटक में सम्राट हर्ष के जीवन का सारी घटनाएँ ऐतिहासिक है। सेठ जी ने उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया है लेकिन उन घटनाओं के उद्देश्यों के सम्बन्ध में अपने निजी विशेषत: गांधीवादी मतों से काम लिया है।

सम्राट चन्द्रगुप्त भारतीय इतिहास के एक शौर्य, तेजस्विता, देशप्रेम और राष्ट्रवाद से ओत प्रोत है। शशिगुप्त नाटक मौर्य साम्राज्य से जुडी हुई घटना मानी जाती है। इसमें तीखा सत्य, प्रामाणिकता और नयी ऐतिहासिक खोज या सुझबूझ हमें मिलती है। सर्वत्र इस घटना के इर्दगिर्द सर्वग शतरंज के एक कुशल खिलाडी की तरह चाणक्य खेलता है और अखिर बाजी मारता है। इस 'शशिगुप्त' नाटक में भी सातवी शताब्दी का ऐतिहासिक वातावरण हमें दिखायी देता है।

'शेरशाह' नाटक भारतीय इतिहास का और मुस्लिम युग से संम्बन्धित घटनाएँ है। पृथ्वीराज चौहान और राणा साँग की सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक युगीन परिस्थिति

का चित्रण सेठ जी ने लिया है। मुगलकाल में मुगलों का भारत पर होनेवाले स्थिति का वर्णन हमें देखने को मिलता है। मुगल काल की तिथियाँ ही इस नाटक में वर्णित की गयी है। हिन्दू - मुसलमान दोनों मिलकर विदेशी मुगलों का आक्रमण करते है और हुमायूँ को खाली हाथ लोटते है। एकता का महत्व इतिहास के आधार पर सेठ जी ने बताया है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि ऐतिहासिक नाटको में प्रखर रुप से ऐतिहासिकता दिखायी देती है। साथ ही साथ घटना और ऐतिहासिक तिथियों का भी उल्लेख हमें देखने को मिलता है। राष्ट्रीय एकात्मता, विश्वबन्धुत्व की भावना और स्वाधीनता ऐसी अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का सेठ जी ने उल्लेख किया है।

5.10.6 विवेच्य नाटकों मे ऐतिहासिक घटनास्थल -

सेठ गोविन्ददास 'हर्ष' नाटक में ऐतिहासिक घटनास्थल स्थाण्वीश्वर, कान्यकुब्ज और कर्णसुवर्ण का चित्रण अत्यंत मार्मिक ढंग से दिखायी देता है। इन ऐतिहासिक घटना स्थलों से हमें अनेक इतिहास की घटनाओं का ज्ञान मिलता है। अत: उस घटना स्थलों से उस वक्त की स्थिति और आदर्श महापुरुषों का चरित्रचित्रण हमें देखने को मिलता है। इतिहास के आधार पर उस घटना स्थल उस युगीन परिस्थिती की हम चर्चा कर सकते है। हर्ष नाटक में उस वक्त के घटनास्थलों का आधार लेकर हर्ष जैसे आदर्श चरित्र को हमारे सामने सेठ जी प्रस्तुत करते है।

सेठ गोविन्ददास जी ने 'शशिगुप्त' नाटक में अनेक ऐतिहासिक घटनास्थलों का वर्णन किया है। मोरपर्वत, तक्षशिला, पाटलीपुत्र और वितस्ता का तट इन ऐतिहासिक घटना स्थलों का सजीव वर्णन , शशिगुप्त का आदर्श चरित्र वर्णित किया है। मौर्य साम्राज्य में ऐतिहासिक घटनास्थलों का चित्रण भी हमें देखने को मिलता है। ३२७ ई.पू.के. लगभग चुनाव का अधिपति सिकन्दर और अश्वक जाति का सरदार शशिगुप्त में युध्द होता है। शशिगुप्त घटनास्थलों का वर्णन उनके स्वाभाविक विशेषताओं से परे लगते है। मौर्यवंश की अनेक ऐतिहासिक घटनास्थलों से उन्हें प्रेरणा मिली है।

शेरशाह नाटक में जौनपूर, सहसराँ और बिहार शरीफके आगरे का वर्णन दिखायी देता है। इन ऐतिहासिक घटनास्थलों के माध्यम से शेरशाह का आदर्श चरित्र सेठ जी हमारे सामने प्रस्तुत करना चाहते है। चुनार किले का वर्णन और चौसा गाँव में हुमायूँ के साथ युध्द का वर्णन महत्वपूर्ण भाषा है। शेरशाह, निजाम और ब्रह्मादित्य यह तीन पात्रों के चरित्रचित्रण से शेरशाह नाटक सफल माना गया है। निष्कर्षत: विवेच्य नाटकों में सेठ जी आदर्श चरित्रो द्वारा, राष्ट्रीय एकात्मता, सर्वधर्मसमभाव, प्रस्थापित करना चाहते है।

निष्कर्ष :-

सेठ गोविन्ददास सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक नाटककार माने जाते है। उन्होंने ऐतिहासिक नाटकों के विशेषताओं के आधार पर विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता का निर्माण किया है। इतिहास यह सत्य होता है लेकिन ऐतिहासिकता कल्पना पर आधारित होती है। ऐतिहासिकता में सत्य का मिश्रण रहता है लेकिन इतिहास में सत्य घटना ही रहती है। उसमें परिवर्तन तथा बदलाव नहीं आ जाता। सेठ गोविन्ददास जी ने युगीन पृष्ठभूमि वातावरण का भी चित्रण किया है। उस युग की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितीओं का इतिहास के आधारभूत विषयवस्तु को लेकर सभी ऐतिहासिक नाटकों का निर्माण सेठ जी ने किया है।

स्वातंत्र्यपूर्वकालीन विवेच्य नाटकों का प्रमुख उद्देश परतंत्र भागों को स्वतंत्र करना, राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करना, सार्वजनिक हित, देशी-विदेशी राजाओं से परस्पर मैत्री स्थापित करना और साम्प्रदायिकता से मुक्त होकर देशभक्ति से परिपूर्ण रहना। साथ ही साथ ऐतिहासिक नाटकों में विषय वस्तु का आधार इतिहास होने के कारण ऐतिहासिकता निर्माण हो गयी है।

संदर्भ सूची

1. वामन शिवराम आपटे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 174
2. प्रधान संपादक वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृ. 307
3. मूल संपादक, श्यामसुदंरदास बी.ए., हिन्दी शब्दसागर, (प्र.ख.) पृ. 510
4. डॉ. सुषमा त्यागी, प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास और कला, पृ. 5
5. रामनारायण सिंह, मधुर, हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास, पृ. 17
6. हिन्दी नाटक पुनर्मूल्यांकन, धनंजय, पृ. 191
7. धनंजय हिन्दी नाटक, उदभव और विकस, पृ. 439
8. हिन्दी नाटक, डॉ. सावित्री स्वरुप, पृ. 151
9. मधुर रामनारायण सिंह, हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास, पृ. 17
10. चुहा सत्यपाल, हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास प्रतिपादन एवं विकास, पृ. 3
11. हिन्दी के ऐतिहासिक नाटको में इतिहास तत्व, पृ. 75
12. डॉ. धनंजय, हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व, पृ. 100
13. रामचंद्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर, पृ. 144
14. वामन शिवराम आपटे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 75
15. प्रो. रमचरण महेन्द, सेठ गोविन्ददास नाटकयकला तथा कृतियाँ, पृ. 77
16. डॉ. सूरज कान्तवर्मा, हिन्दी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्रचित्रण, पृ. 258